पाठ्यक्रम के उद्देश्य :— एक अच्छे पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. सांस्कृतिक धरोहर :— हाल-हालाएं अपनी सांस्कृतिक धरोहर समझे तथा उसमें निष्ठा रखें। भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थों— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है।

2. ज्ञान और कुशलता :— बालक-बालिकाओं में उनकी योग्यता, क्षमता तथा रूचि के अनुसार ज्ञान और विभिन्न कुशलताओं का विकास करना।

3. चरित्र :— विद्यार्थियों का व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय चरित्र दोनों का विकास करना।

4. स्वास्थ्य :— बालकों तथा बालिकाओं को स्वस्थ रखना। स्वास्थ्य में मानसिक एवं शारीरिक दोनो प्रकार का स्वास्थ्य आ जाता है।

5. नागरिकता :— हाल-हालाओं को उत्तम नागरिक बनाना जिससे कि वे अपने कर्तव्यों और अधिकारों को समझ सकें।

6. भावनात्मक विकास :— बालक-बालिकाओं का भावनात्मक विकास करना ताकि वह जीवन के सुन्दर पक्ष का दर्शन कर सकें।

7. स्पष्ट चिन्तन शक्ति का विकास :— विद्यार्थियों में स्पष्ट चिन्तन तथा विवेक शक्ति का विकास करना जिससे वे सत्य तथा असत्य की पहचान कर सकें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

8. सामाजिक भावना का विकास :- विद्यालयों में विभिन्न कार्य-क्रमों द्वारा बालकों तथा कन्याओं में सामाजिक या सामूहिक भावना का विकास करना ताकि व्यक्तिगत स्वार्थ से उठकर शुद्ध सामाजिक या राष्ट्रीय दृष्टि से सोच सकें।

9. सौन्दर्यानुभूति एवं अभिव्यक्ति :- बालकों में सुन्दरता के उपयोग के लिए सौन्दर्यानुभूति तथा सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का विकास करना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त :—
[Principles of Curriculum Construction]

पाठ्यक्रम निर्माण हेतु प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित है——

1. **उपयोगिता का सिद्धान्त :—** पाठ्यक्रम में जिन विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाये, वह बालकं के भावी जीवन हेतु उपयोगी होने चाहिए। इस सम्बन्ध में मन ने लिखा है, "साधारण मनुष्य सामान्यतया यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिए कुछ बातें सीखें परन्तु समग्र में वह चाहता है कि उनको वे ही बातें सिखाई जायें जो भावी जीवन में उनके लिए उपयोगी हों।"

2. **रचनात्मक कार्य का सिद्धान्त :—** पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो बालक की रचनात्मक शक्ति के विकास हेतु प्रेरित करें। रेमाण्ट के शब्दों में, "जो पाठ्यक्रम वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता के अनुकूल है; उसमें निश्चित रूप से रचनात्मक विषयों के प्रति सुझाव होने चाहिए।"
हालों को ऐसे अवसर अवश्य देने चाहिए जो बालक की रचनात्मक शक्ति का विकास कर सकें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

3. जीवन से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम में निहित विषय ऐसे होने चाहिए जो छात्रों को जीवन के समीप ले जाएं, उसमें उन सभी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो प्रत्येक बालक के जीवन के विभिन्न पक्षों पर आधारित हो। पाठ्यक्रम दूरगामी नहीं होना चाहिए।

4. खेल व कार्य की क्रियाओं के अन्तर्सम्बन्ध का सिद्धान्त :-
क्रो एवं क्रो के अनुसार, "जो लोग सीखने की प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं, उनका उद्देश्य यह होना चाहिए कि वे ज्ञानात्मक क्रियाओं की ऐसी योजना बनायें जिसमें खेल के दृष्टिकोण को स्थान प्राप्त हो सके।"
पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय हमें खेल की गतिविधियों को भी उसमें सम्मिलित करना चाहिए जिससे कि पाठ्यक्रम रुचिपूर्ण हो सके परन्तु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि खेल की गतिविधियाँ तभी सार्थक होंगी।

5. क्रिया का सिद्धान्त :- पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए जो बालक को क्रिया करने हेतु प्रेरित करे। इसमें बालक के मस्तिष्क, हृदय आदि को क्रियाशील बनाया जाना चाहिए, साथ ही साथ 'करके सीखने' पर बल दिया जाना चाहिए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

6. अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त :- पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हमें उन सभी अनुभवों को सम्मिलित करना चाहिए जो बालक समाज में रहकर विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से प्राप्त करता है। पाठ्यक्रम का सम्बन्ध केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है वरन् उसमें उन सभी अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, "पाठ्यक्रम का अर्थ, केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं लिया जाता है वरन इसमें अनुभवों की पूर्णता निहित होती है।"

7. श्रेष्ठ आचरण के आदर्शों की प्राप्ति का सिद्धान्त :- पाठ्यक्रम में उन विषयों एवं क्रियाओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए जो बालक को अच्छे चरित्र का प्रशिक्षण दे सके। शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों को चरित्रवान बनाना है और शिक्षा अपने इस उद्देश्य की पूर्ति पाठ्यक्रम के माध्यम से करती है।

8. सहसम्बन्ध का सिद्धान्त :- पाठ्यक्रम के विषयों का अध्ययन विभिन्न अध्यापकों के द्वारा उतनी ~~क्षमता~~ क्षमता से कराया जाना चाहिए कि एक विषय से दूसरे विषय का सम्बन्ध किया जा सके। छात्र ज्ञान अर्जित करते समय विभिन्न विषयों के मायाजाल में न फँसकर उनमें एकरूपता स्थापित करने का प्रयास करें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

9. वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त :- शिक्षा ग्रहण करने वाला बालक अपनी निजी इच्छा की पूर्ति पाठ्यक्रम के द्वारा करता है अतः बालक की 'स्व' सम्बन्धी आवश्यकताओं व इच्छाओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा होनी चाहिए।

10. समय का सिद्धान्त :- किसी भी विषय या स्तर के पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इसे पढ़ने हेतु हमारे पास कितना समय है। समय को यदि ध्यान में नहीं रखा गया तो दो परिणाम होंगे या तो पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं हो पायेगा या फिर पाठ्यक्रम समय से पूर्व समाप्त हो जाएगा।

प्राचार्य
मीरा मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

2.10.20